REVIEW OF RESEARCH

ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514
VOLUME - 8 | ISSUE - 8 | MAY - 2019

मिर्ज़ापुर जनपद, उत्तर प्रदेश में गरीबी एवं स्वास्थ्य का भौगोलिक स्वरुप

सतीश कुमार सिंह

शोध छात्र, भूगोल विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी, उत्तर प्रदेश

सारांश:-

प्रस्तुत शोध पत्र मुख्यतः प्राथमिक आंकड़ो पर आधारित है | सर्वेक्षण जनपद के कुल 12 विकासखंडों के विभिन्न ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्रों के विभिन्न सामाजिक समुदायों के कुल 520 प्रतिचयनों (sample) के विश्लेषण पर आधारित है | जनपद के ग्रामीण एवं नगरीय समुदायों में गरीबी के लक्षण के रूप में राशनकार्ड के आवंटन को आधार बनाया गया है | जिसका विश्लेषण समुदाय, धर्म, जाति, रोजगार एवं बेरोजगार, शैक्षणिक स्तर एवं आवास की स्थिति के आधार पर किया गया है | इन सभी कारकों का क्षेत्र के लोंगों के स्वास्थ्य पर किस प्रकार प्रभाव पड़ता है उसका भूवैन्यासिक विश्लेषण किया गया है |

मुख्य शब्द:- गरीबी, स्वास्थ्य, प्रतिचयन, सामाजिक समुदाय, शैक्षणिक स्तर, भौगोलिक स्वरुप |

प्रस्तावना:-

ग्रामीण क्षेत्रों में गरीबी का एक प्रमुख कारण भूमि संसाधन की कमी हैं इस प्रकार गरीबी इस सन्दर्भ में एक जटिल घटना एवं उपागम हैं । आर्थिक एवं सामाजिक नीतियों का सामाजिक-आर्थिक संरचना पर प्रभाव पड़ता हैं । गरीबी एवं स्वास्थ्य में अंतर्सम्बन्ध एक वास्तविकता है लेकिन यह काफी जटिल भी है यह कोइ समुदाय नहीं है और न ही यह कोई रसायन विज्ञान है । गरीबी एवं स्वास्थ्य को न तो परिभाषित किया जा सकता है और न ही मापा जा सकता है इसे मानव की आवश्यकताओं से मापा जाता है जबकि मानव की आवश्यकताएं असीमित है (डर्क्स - 1975)। यहा गरीबी का कोई सर्वमान्य नियम या परिभाषा नहीं है (दांतेवाला - 1973) । अनिश्चितता के बीच कुछ विद्वानों एवं संस्थाओं ने गरीबी को परिभाषित किया है- जीवन जीने की न्यूनतम आवश्यकताओं को न प्राप्त कर पाना गरीबी है" (विश्व बैंक - 1990) ।

अध्ययन का उद्देश्य:-

शोध का मुख्य उद्देश्य जनपद में स्थित गरीबी एवं स्वास्थ्य के बीच के कड़ी को पहचानना है और इसको दूर करने के लिए ऐसी रणनीति विकसित करना है जिसमे गरीबी उन्मूलन द्वारा स्वास्थ्य को सुधारा जा सकें ।

अध्ययन का मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित है :

1. जनपद में गरीबी एवं स्वास्थ्य के अन्तःसम्बन्धों को रेखांकित करना ।
2. जनपद में गरीबी एवं स्वास्थ्य को विभिन्न सामाजिक संरचना में विश्लेषित करना ।
3. जनपद में स्वास्थ्य सुविधाओं पर गरीबी के प्रभाव का विश्लेषण करना ।

विधितंत्र एवं तकनीक:-

तथ्यों को सुव्यवस्थित एवं क्रमबद्ध तरीके से व्यवस्थित करना तथा उनसे कुछ नवीन तथ्यों को खोज निकालने की विधि को शोध विधि कहते है (ऑक्सफ़ोर्ड डिक्सेनरी,2005)

प्रस्तुत शोध पत्र में विभिन्न स्रोंतों से प्राप्त प्राथमिक आकड़ो को प्राप्त करने हेतु क्षेत्र अध्ययन के दौरान प्रश्नावली तथा साक्षात्कार विधियों का प्रयोग किया गया है ।

अध्ययन के दौरान दो तकनीकों का प्रयोग किया गया है :

1.वैज्ञानिक तकनीक

2. सामाजिक तकनीक

वैज्ञानिक तकनीक के द्वारा शोध समस्या, उद्देश्य,परिकल्पना, संकल्पनात्मक परिभाषाएं, प्राथमिक एवं द्वितीयक आंकड़ो का वर्गीकरण किया गया है । जबकि सामाजिक तकनीक के द्वारा क्षेत्र सर्वेक्षण के दौरान प्राप्त अनुभवों का विश्लेषण किया गया है । प्रस्तुत अध्ययन में कंप्यूटर के विभिन्न प्रोग्रामों (Adobe Photoshop7.0, Paint, Microsoft Office 2007 & 2010, Excel) तथा कैलकुलेटर आदि यंत्रों का प्रयोग किया गया है ।

अध्ययन क्षेत्र:-

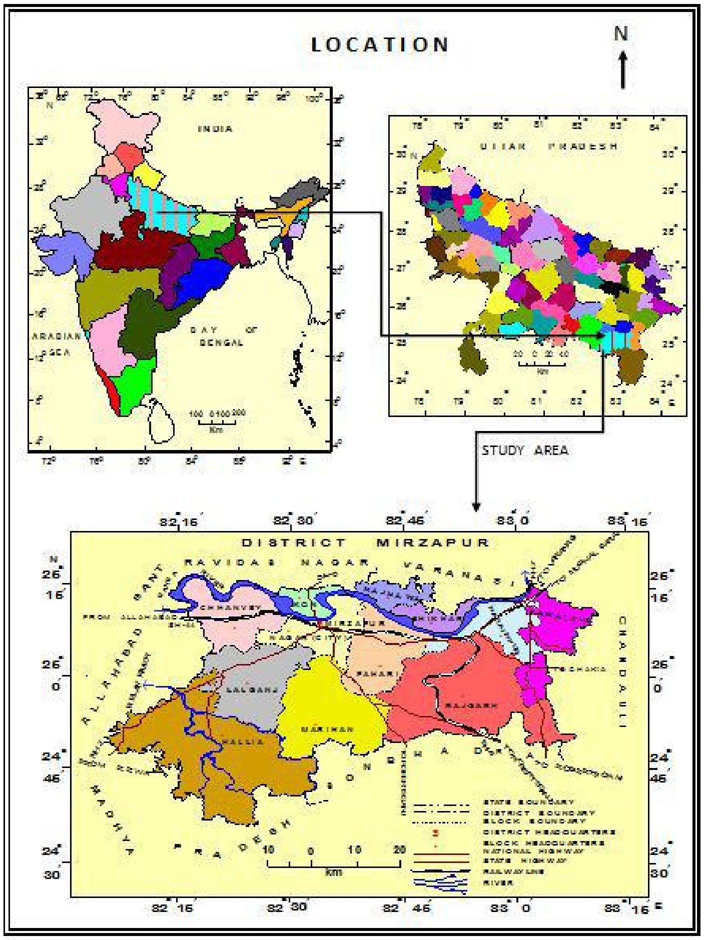

अध्ययन क्षेत्र (मीरजापुर) उत्तर प्रदेश के दक्षिण पूर्वी भाग में स्थित है । इसका विस्तार 24°34 से 25°16 उत्तरी अक्षांश तथा 82°5 से 83°11 पूर्वी देशांतर तक है । जनपद के अंतर्गत मध्य गंगा मैदान का आंशिक भाग तथा विन्ध्य का पठारी भाग आता है । इसके उत्तरी सीमा पर संत रविदास नगर तथा वाराणसी, दक्षिणी सीमा पर मध्य प्रदेश तथा सोनभद्र, पूर्वी सीमा पर चंदौली तथा पश्चिमी सीमा पर इलाहाबाद जनपद स्थित है । जनपद की पूर्व से पश्चिम की लम्बाई 144.2 किलोमीटर तथा उत्तर से दक्षिण की लम्बाई 84 किलोमीटर है । जनपद का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 4521 वर्ग किलोमीटर है ।

जनपद की कुल जनसंख्या 2494533 (2011) है । मीरजापुर जनपद 4 तहसीलों (मड़िहान, मीरजापुर, चुनार, लालगंज) तथा 12 विकासखंडो में बटा है । जनपद में 4 नगरीय क्षेत्र मीरजापुर-विंध्याचल, चुनार, कछवां तथा अहरौरा है।

विश्लेषण एवं व्याख्या:-

जनपद के प्रतिचयनित क्षेत्रों में समुदायवार राशनकार्ड आवंटन का स्वरुप

सारणी: 1

जनपद के प्रतिचयनित क्षेत्रों में समुदायवार राशनकार्डों का आवंटन

			राशनकार्ड			
			लाल	पीला	सफेद	कुल
समुदाय	ग्रामीण	प्रतिचयन	48	259	103	410
		समुदाय	11.7%	63.2%	25.1%	100.0%
		कुल	9.2%	49.8%	19.8%	78.8%
	नगरीय	प्रतिचयन	7	82	21	110
		समुदाय	6.4%	74.5%	19.1%	100.0%
		कुल	1.3%	15.8%	4.0%	21.2%
योग		प्रतिचयन	55	341	124	520
		समुदाय	10.6%	65.6%	23.8%	100.0%
		कुल	10.6%	65.6%	23.8%	100.0%

स्रोत: व्यक्तिगत सर्वेक्षण 2014

आरेख: 1

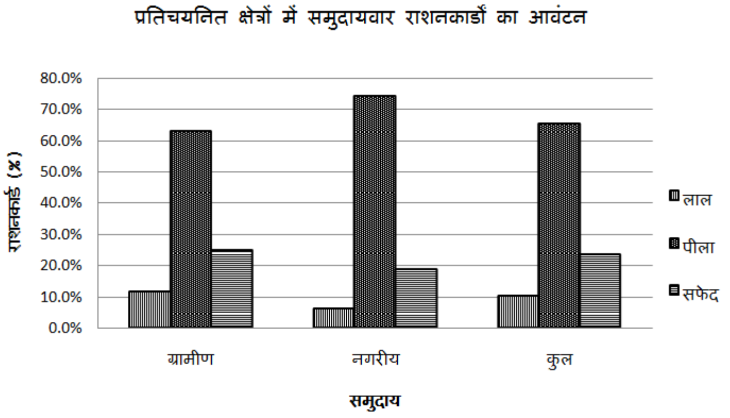

LBP PUBLICATION

किसी भी क्षेत्र के ग्रामीण एवं नगरीय जनसंख्या के रहन-सहन एवं सामाजिक आर्थिक संरचना में घनिष्ठ सम्बन्ध पाया जाता है जो उस क्षेत्र में रहने वाले लोंगों के स्वास्थ्य को भी प्रभावित करता है | तथा इन्ही आधारों पर दोनों समुदायों में विभिन्नता भी पायी जाती है और इन्ही विभिन्नताओं के आधार पर सरकारी योजनाओं का वितरण भी भिन्न होता है |

जनपद के प्रतिचयनित क्षेत्रों में समुदायवार राशन कार्ड का वितरण ग्रामीण समुदाय के कुल राशन कार्ड का 11.7% लाल, 63.2% पीला एवं 25.1% सफ़ेद है | जिसमे पीला कार्ड का प्रतिशत अधिकतम है जिसका प्रमुख कारण है जनपद के कुल ग्रामीण समुदाय का अधिकतम भाग मैदानी एवं कृषितरूप से विकसित ग्रामीण क्षेत्रों में रहती है| जबकि सबसे कम लाल कार्डधारी है जिसका प्रमुख है जनपद के पहाड़ी एवं अल्प विकसित ग्रामीण क्षेत्रों में जनसंख्या का निम्न वितरण |

इसी प्रकार नगरीय समुदाय में कुल राशन कार्ड का 6.4% लाल, 74.5% पीला एवं 19.1% सफ़ेद कार्ड धारी है | नगरीय क्षेत्रों में सर्वाधिक पीला राशन कार्ड का वितरण (74.5%) हुआ है जिसका प्रमुख कारण नगरीय या शहरीय क्षेत्रो में लोगो का सामाजिक एवं आर्थिक विकास गर्मी क्षेत्रो की अपेक्षा अधिक हुआ है| नगरीय क्षेत्रों में लाल राशन कार्ड का आवंटन कम हुआ है जिसका प्रमुख कारण है ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में नगरीय क्षेत्रों में बेरोजगारी का स्तर निम्न है | जनपद के कुल राशन कार्ड का ग्रामीण क्षेत्रों में 9.2% लाल राशन कार्ड, 49.8% पीला राशन कार्ड का एवं 19.8% सफ़ेद राशन कार्ड का आवंटन किया गया है जबकि नगरीय क्षेत्रों में 1.3% लाल राशन कार्ड, 15.8% पीला राशन कार्ड का एवं 4.00% सफ़ेद राशन कार्ड का आवंटन किया गया है | जनपद में कुल राशन कार्डों का आवंटन देखा जाय तो 78.8% ग्रामीण समुदाय एवं 21.2% नगरीय समुदाय में हुआ है जिसका प्रमुख कारण जनपद के कुल जनसंख्या का लगभग 79% जनसँख्या ग्रामीण क्षेत्रों में तथा लगभग 21% जनसँख्या नगरीय क्षेत्रों में निवास करती है|

जनपद के प्रतिचयनित गाँवों में व्यवसायवार राशनकार्ड आवंटन का स्वरुप

जनपद में व्याप्त सामाजिक आर्थिक विसंगतियों का प्रभाव क्षेत्र के लोगों के रहन सहनएवं उनको मिलने वाले सरकारी सुविधाओं पर भी दृष्टिगत होता है | जबकि क्षेत्र के अधिकांश लोग कृषि कार्यों में संलग्न है जिन्हें अधिकांश सरकारी सुविधाओं से वंचित रहना पड़ता है जबकि ऐसे व्यक्ति जो सरकारी नौकरी करते है तथा उनका सामाजिक बर्चस्व ज्यादा है वे सरकारी सुविधाओं का लाभ गलत तरीके से उठाते है | जो कि क्षेत्र में व्याप्त एक बड़ी समस्या है जिस और सरकारी अधिकारियों का ध्यान आकर्षित करने की जरूरत है जिससे क्षेत्र में स्थित वास्तविक गरीबी को समाप्त किया जा सके |

सारणी: 2

जनपद के प्रतिचयनित गाँवों में व्यवसायवार राशनकार्डों का आवंटन

			राशनकार्ड			
			लाल	पीला	सफेद	कुल
व्यवसाय	कृषि	प्रतिचयन	33	232	25	290
		व्यवसायवार	11.4%	80.0%	8.6%	100.0%
		कुल	6.3%	44.6%	4.8%	55.8%
	व्यापार	प्रतिचयन	5	30	31	66
		व्यवसायवार	7.6%	45.5%	47.0%	100.0%
		कुल	1.0%	5.8%	6.0%	12.7%
	सरकारी सेवायें	प्रतिचयन	0	76	4	80
		व्यवसायवार	0.0%	95.0%	5.0%	100.0%
		कुल	0.0%	14.6%	.8%	15.4%
	मजदूर	प्रतिचयन	17	3	64	84
		व्यवसायवार	20.2%	3.6%	76.2%	100.0%
		कुल	3.3%	.6%	12.3%	16.2%
योग		प्रतिचयन	55	341	124	520
		व्यवसायवार	10.6%	65.6%	23.8%	100.0%
		कुल	10.6%	65.6%	23.8%	100.0%

स्रोत: व्यक्तिगत सर्वेक्षण 2014

आरेख: 2

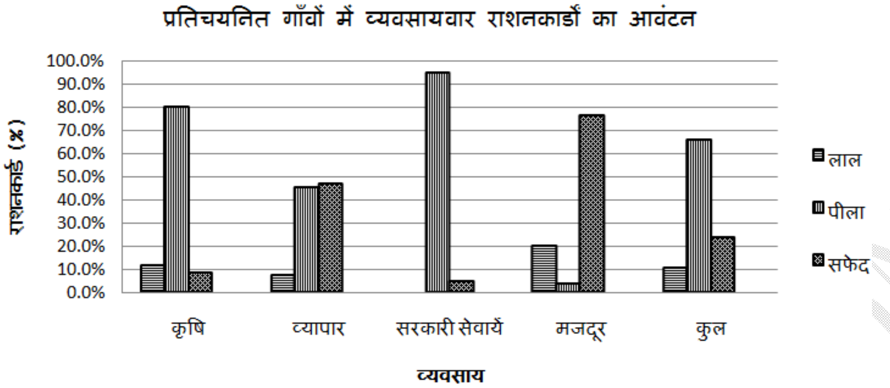

जनपद के कुल प्रतिचयनित जनसँख्या का 55.8% कृषि, 12.7% व्यापार, 15.4% सरकारी सेवा एवं 16.2% मजदूरी में संलग्न है | इस प्रकार जनसँख्या के क्रिया कलापों में भिन्नता उनके आय के स्तर को भी प्रभावित करता है तथा उनको आवंटित राशन कार्ड का प्रकार भी प्रभावित होता है | कृषि क्षेत्र में संलग्न कुल जनसँख्या का 11.4% लाल कार्ड, 80.0% पीला कार्ड एवं 8.6% सफ़ेद कार्डधारी है जबकि व्यापार में संलग्न कुल जनसंख्या का 7.6% लाल कार्ड, 45.5% पीला कार्ड एवं 47.0% सफ़ेद कार्डधारी है | सरकारी सेवाओ में संलग्न जनसँख्या का 0.0% लाल कार्ड, 95.0% पीला कार्ड एवं 5.0% सफ़ेद कार्डधारी है | मजदूरी में संलग्न जनसंख्या का 20.2% लाल कार्ड, 3.6% पीला कार्ड एवं 76.2% सफ़ेद कार्डधारी है|

जनपद के प्रतिचयनित जनसंख्या में आवंटित कुल राशन कार्ड का 10.6% लाल राशनकार्डधारी है जिसका 6.3% कृषि,1.0% व्यापार,0.0% सरकारी सेवाओ एवं 3.3% मजदूरी में संलग्न है | इस प्रकार अधिकतम लालकार्ड धारी कृषि क्षेत्र में संलग्न है जिसका प्रमुख कारण जनपद के प्रतिचयनित क्षेत्रो के अधिकतम जनसंख्या कृषि कार्यो में संलग्न है एवं भू जोतों का आकार भी छोटा है तथा परिवार के विभाजन के कारण भू जोतों का आकार और भी छोटा होता जा रहा है जिसका सीधा प्रभाव लोगों के सामाजिक आर्थिक स्थिति पर पड़ रहा है | सबसे कम लाल राशन कार्ड सरकारी सेवाओ में संलग्न जनसंख्या के पास है जिसका प्रमुख कारण नियमित आय एवं उच्च सामाजिक-आर्थिक स्तर है |

जनपद के प्रतिचयनित जनसंख्या में आवंटित कुल राशन कार्ड का 65.6% पीला राशनकार्डधारी है जिसका 44.6% कृषि,5.8% व्यापार,14.6% सरकारी सेवाओ एवं 0.6% मजदूरी में संलग्न है | अधिकतम पीला राशन कार्ड कृषि क्षेत्रों में संलग्न जनसंख्या के पास है जिसका प्रमुख कारण जनपद के कुल जनसंख्या का अधिकतम भाग कृषि कार्यों में संलग्न है | जबकि न्यूनतम पीला कार्ड मजदूर वर्ग के पास है जिसका प्रमुख कारण है मजदूर वर्ग के लोंगो का निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर |

जनपद के प्रतिचयनित जनसंख्या में आवंटित कुल राशन कार्ड का 23.8% सफ़ेद राशनकार्डधारी है जिसका 4.8% कृषि,6.0% व्यापार,0.8% सरकारी सेवाओ एवं 12.3% मजदूरी में संलग्न है | इसमें सर्वाधिक सफ़ेद कार्ड मजदूर वर्ग के पास है जिसका प्रमुख कारणमजदुर जनसंख्या का निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर है | जबकि सबसे कम सफ़ेद कार्ड सर्कार सेवाओं में संलग्न लोंगो के पास है जिसका प्रमुख कारण बेहतर सामाजिक आर्थिक स्थिति एवं आय का नियमित स्रोत है |

जनपद के प्रतिचयनित क्षेत्रों में समुदायवार अक्षमता-

सारणी: 3

जनपद के प्रतिचयनित गाँवों में समुदायवार अक्षमता					
			अक्षम व्यक्ति		कुल
			हाँ	नहीं	
समुदाय	ग्रामीण	प्रतिचयन	26	363	389
		समुदायवार	6.7%	93.3%	100.0%
		अक्षमतावार	43.3%	83.1%	78.3%
		कुल	5.2%	73.0%	78.3%
	नगरीय	प्रतिचयन	12	96	108
		समुदायवार	10.5%	89.5%	100.0%
		अक्षमतावार	56.7%	16.9%	21.7%
		कुल	6.8%	14.9%	21.7%
योग		प्रतिचयन	60	437	497
		समुदायवार	12.1%	87.9%	100.0%
		अक्षमतावार	100.0%	100.0%	100.0%
		कुल	12.1%	87.9%	100.0%

स्रोत: व्यक्तिगत सर्वेक्षण 2014

जनपद के प्रतिचयनित क्षेत्रों को दो समुदायों ग्रामीण एवं नगरीय में विभाजित किया गया है | सर्वेक्षण के दौरान पाया गया कि अक्षम व्यक्ति वही है जिसका सामाजिक आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं है या वह जन्म से ही अक्षम है |

ग्रामीण समुदाय में कुल प्रतिचयन का 6.7% जनसंख्या ही ऐसी थी जिन्होंने अक्षमता को स्वीकार किया जबकि 93.3% जनसंख्या ने अक्षमता को अस्वीकार कर दिया | वही नगरीय क्षेत्रो में देखा जाय तो 10.5% जनसंख्या ने अक्षमता को स्वीकार किया है जबकि 89.5% जनसंख्या ने इसे अस्वीकार किया है | यहाँ पर नगरीय क्षेत्रो में अक्षम व्यक्तियों का प्रतिशत ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में अधिक है जिसका प्रमुख कारण है भीख मांगने वाले जनसंख्या का संकेन्द्रण शहरीय क्षेत्रों में अधिक होना है |

सारणी का अक्षमतावार विश्लेषण करने से पता चलता है की कुल अक्षम जनसंख्या का 43.3% ग्रामीण तथा 56.7% नगरीय क्षेत्रों में रहती है | जबकि जनपद के कुल जनसंख्या का अक्षम व्यक्ति 5.2% ग्रमीण एवं 6.8% नगरीय क्षेत्रों में है |

सन्दर्भ सूची (Bibliography)

Mishra, R.P. (2007). "Geography of Health: A Treatise on Geography of Life and Death in India", Concept Publishing Company, New Delhi – 110059 (India).

Sinha, B.R.K.(2009). "Population, Environment and Development – A Global Challenge for the 21st Century", New Century Publications, New Delhi, India – 110002.

Nayak, L.T. (2013). "*A Proposed new Methodology for Measuring the Poverty Status : A Micro Level Geographical Analysis of Five Selected Villages of Dharwad District, Karnataka"*, National geographical Journal of India, BHU, Varanasi, Vol.59, Pt.(2), PP.2.

Rorabachor, J. Albert (2010). "Hunger and Poverty in South Asia", Gyan Publishing House, 23, Main Ansari Road, Dariya Ganj, New Delhi – 110002.

Rout, himanshu Shekhar & Panda, Prashant Kumar (2007). "Health Economics in India", New Century Publications and Printed at Singhal Print Media, New Delhi -110005.

योजना , फरवरी 2014 . "*बीमारी-एक रूपक*", अंक 2 , पृष्ठ 5, 38.

Gore, M.S. & Chitnish, S. (1967). "Papers in Sociology of Education in India", N.C.E.R.T., New Delhi.

अग्रवाल ए.एन. (1988): "भारतीय अर्थव्यवस्था (विकास एवं आयोजन)" बाईली इस्टर्न लिमिटेड, नई दिल्ली |

LBP PUBLICATION